

द्विभाषिता और बहुभाषिता के विविध रूप में कोड मिश्रण और कोड अंतरण (हिंदी भाषा के विशेष संदर्भ में)

कुमार माधव

शोधार्थी (हिंदी विभाग)

अंग्रेजी एवं विदेशी भाषा विश्वविद्यालय तारनाका हैदराबाद 500007

भारत की मिट्टी पर सदियों से बहुभाषिकता की इमारत बनती रही है तो खंडहर भी होती रही है। प्राकृत, संस्कृत, पाली, अपभ्रंश फारसी ये सभी भाषाएँ इसी के उदाहरण हैं। पहले ये सभी राजभाषा हुआ करती थी। किन्तु वर्तमान में ये भाषाएँ शोध का विषय बन गई हैं। पहले जहाँ भाषा को स्थापित करने का माध्यम आक्रमण होता था। अब यह तकनीकी के माध्यम से किया जा रहा है। वर्तमान समय में यह बताना मुश्किल है कि कब कोई दूसरी भाषाओं की सीमाओं में प्रवेश कर जाता है। यह परिस्थिति सीमावर्ती राज्यों में देखने को मिलता है। किन्तु न्यू मीडिया के इस दौर में सब कुछ बिकाऊ है। जहाँ पहले कोयला, लोहा और तेल बेचा जाता था, वहीं अब संप्रेषण, भाव और विचार को प्राथमिकता से बेचा जाता है। फेसबुक, गूगल, यूट्यूब आदि इसी के उदाहरण हैं। व्यक्ति औसतन प्रतिदिन 2 घंटे फोन देखता है। इसलिए वर्तमान समय में डिजिटल माध्यम के द्वारा पहले की तुलना में अधिक तेजी से एक भाषा दूसरी भाषा के संपर्क में आ रही है और एक दूसरे को प्रभावित कर रही है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि भूमंडलीकरण के इस दौर में सूचना को खाया जा रहा है। किसी को इस बात की भनक तक नहीं है कि अधिक खाने की इस प्रवृत्ति से भाषिक सेहत बिगड़ सकता है। ऐसी स्थिति में यह संभव नहीं है कि व्यक्ति दूसरी भाषा से बिल्कुल अलग-थलग रह सकता है। लोग एक-दूसरे की संस्कृति और समाज को जानने के लिए उत्सुक हैं। स्टेट्स जाँचने और लिखने की आदत बढ़ती जा रही है। ऐसी ही उत्पन्न परिस्थिति या संपर्क की इस घटना से बहुभाषिकता (multilingualism) का जन्म होता है। ऐसा नहीं था कि भारत में पहले बहुभाषिकता नहीं थी। किन्तु पहले यह कार्य विस्थापन और पलायन के माध्यम से होता था। विश्व में भारत एक ऐसा देश है जहाँ अलग-अलग राज्य की अलग-अलग भाषाएँ हैं। उन भाषाओं की कई बोलियाँ हैं जिसके कारण भारत एक बहुभाषी देश बनता है। ऐसे ही तथ्यों को ध्यान में रखकर स्वतंत्रता के बाद यहाँ भाषायी राज्य की अवधारणा लायी गई थी।

द्विभाषिता के विविध रूप

यदि राम तीन भाषाएँ हिंदी, बांग्ला, और तेलुगू बोलना जानता है, तो वह तेलुगू के संदर्भ में बांग्ला और हिंदी के अर्थ में द्विभाषी है। हिंदी के संदर्भ में बांग्ला और तेलुगू के अर्थ में द्विभाषी है। इस प्रकार दो या उससे अधिक भाषाएँ जानने वाले राम को बहुभाषी न कहकर उसे बहुभाषाविद् (Polyglot) कह सकते हैं। राम एक उदाहरण मात्र है। इस तरह की स्थिति भारतीय समाज में प्रत्येक राज्य में पायी जाती है। जहाँ अलग-अलग परिवार की भाषाएँ बोली जाती हैं। इसलिए भारत को बहुभाषिक राष्ट्र भी कहा जाता है।

राज्य और जिला स्तर पर भी द्विभाषिकता की स्थिति पाई जाती है। जहाँ एक भाषा प्रमुख होती है जबकि वही प्रमुख भाषा क्षेत्रीय बोलियों के विकास में रुकावट बनती है। बिहार में बोली जानी वाली तीन भाषाओं को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल किया गया है। किन्तु इसके बावजूद भूमंडलीकरण के कारण अंग्रेजी का दबदबा है। जबकि वास्तविक में अंग्रेजी संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल नहीं है। किन्तु वर्तमान स्थिति कुछ इस प्रकार है- अंग्रेजी>हिंदी>उर्दू>मैथिली और अन्य भाषाएँ भोजपुरी>मगही>अंगिका>वज्जिका आदि।

भारत में द्विभाषिता

भाषा 1+ भाषा 2- इस नियम में यह पाया जाता है कि जब वक्ता एक ही परिवार के दो भाषाओं को बोलने में दक्षता रखता है। किन्तु प्रयोग के स्तर पर एक भाषा गौण हो जाती है। हिंदी और बांग्ला दोनों इंडो-आर्यन परिवार की भाषाएँ हैं। किन्तु जब कोई बांग्ला और हिंदी भाषी कलकत्ता आएगा तो उसकी हिंदी भाषा गौण हो जाती है। उसी तरह जब कोई बांग्ला और हिंदी भाषी बिहार या हिंदी प्रदेश जाता है तो उसकी बांग्ला भाषा गौण हो जाती है। यह स्थिति राजस्थान, बिहार और बंगाल के प्रवासियों के साथ अधिक घटित होती है।

भाषा 1+ भाषा 3- जब वक्ता दो विभिन्न भाषा परिवार की भाषाओं में दक्षता रखत है। इस प्रकार की भाषिक दक्षता व्यापारी समुदाय और अखिल भारतीय प्रशासनिक सेवा में कार्यरत

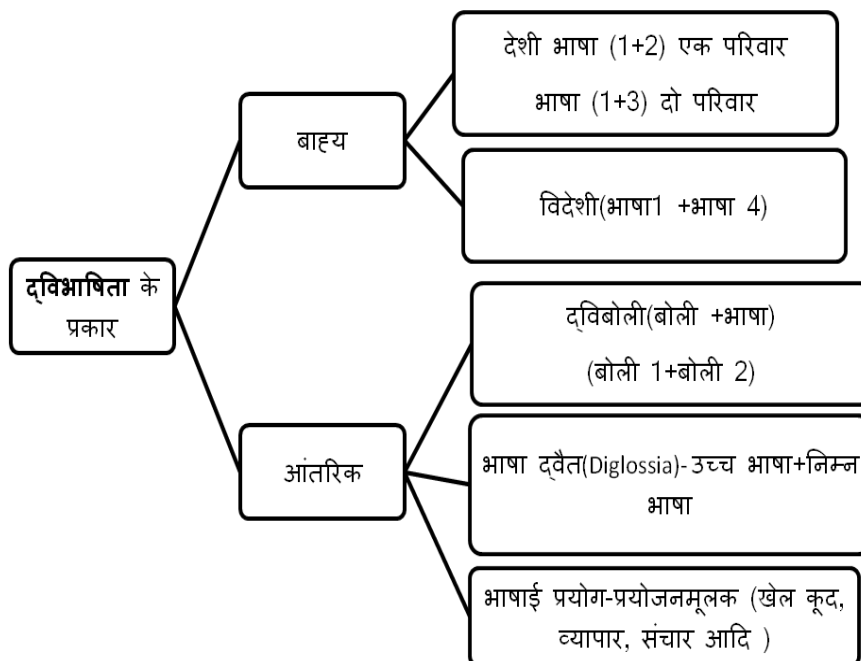
अधिकारियों में पायी जाती है। जहां वे व्यापार और प्रशासनिक कार्य करते हैं उनके लिए वहाँ की भाषा प्रमुख हो जाती है। अंग्रेजी, हिंदी, तमिल या मणिपुरी को इसके अंतर्गत रखा जा सकता है। जैसे- तमिलनाडू राज्य के किसी व्यक्ति को बिहार में भारतीय प्रशासनिक सेवा के तहत नियुक्त किया जाता है। कार्य के दौरान हिंदी भाषा प्रमुख हो जाएगी। जबकि उसके घर पर और राज्य वापस लौटने पर तमिल भाषा प्रधान हो जाएगी।

भाषा 1+ भाषा 4- वर्तमान समय में भारत के शहरी स्कूलों में प्रथम भाषा, द्वितीय भाषा के अतिरिक्त विदेशी भाषा को भी पढ़ाया जाता है। जिसमें जर्मन, फ्रेंच, स्पेनिश, जापानी आदि प्रमुख हैं। इस स्थिति में वक्ता मातृभाषा के अतिरिक्त कोई एक विदेशी भाषा का प्रयोग कर सकता है। यह सत्य है कि प्राथमिक और द्वितीय भाषा की तुलना में विदेशी भाषा में दक्षता कम होती है। जैसे- हिंदी एवं फ्रेंच और हिंदी एवं जर्मन आदि। लेकिन यदि सोहन जर्मन भाषा बोलने में दक्ष है और वह अपने राज्य में ही रहता है। इस स्थिति में संभव नहीं है कि वह जर्मन बोलेगा। लेकिन किसी विशेष परिस्थिति में जर्मन भाषा बोलने की पूरी संभावना बनी हुई है। जैसे- वह बिजनेस प्रोसेस आउटसोर्सिंग (BPO) में काम करता है। जहाँ वह जर्मन भाषी देश के लिए जर्मन में सूचना उपलब्ध कराता है, तो इस स्थिति में उसकी मातृभाषा एवं द्वितीय भाषा गौण हो जाती है।

भूमंडलीकरण और बढ़ती गिग अर्थव्यवस्था ने इस प्रकार के व्यवस्था को जन्म दिया है। आमेजॉन विप्रो, टीसीएस जैसी कंपनी में भाषा 1+4 भाषा फार्मूला पर विदेशी सेवा उपलब्ध कराती है।

साथ ही साथ प्राथमिक भाषाओं में कोड स्विचिंग और कोड मिक्सिंग की प्रवृत्ति का भी जन्म होता है। दूरसंचार के इस युग में बिना यूरोप गए जर्मन और हिंदी भाषा का संपर्क स्थापित हो जाता है। जिसके कारण धीरे-धीरे जर्मन के कुछ शब्द का प्रयोग हिंदी में होने लगता है। किन्तु इस बात की चर्चा नहीं होती है। किंडर गार्टन, फोल्क्स वागेन, एडीडास, नूडल्स आदि।

अब तक जिस द्विभाषिकता की चर्चा हुई। वह बाह्य भाषा के अंतर्गत थी। यह स्थिति सिर्फ दो भाषाओं के बीच न होकर एक भाषा के भीतर भी होता है। समान्यतः दो बोलीयों और दो विशिष्ट शैलियों में यह पाई जा सकती है। कुछ विद्वान बोलियों के मिश्रण को नहीं मानते हैं। जैसे- हिंदी और ब्रज का संबंध, हिंदी और मैथिली का संबंध। इसके अतिरिक्त शैली का भी मिश्रण होता है जिसे द्वैत (diglossia) के नाम से जाना जाता है। इसका उल्लेख फरग्यूसन ने सबसे पहले किया था। इस स्थिति में वक्ता एक ही भाषा के दो विभिन्न शैलियों का प्रयोग या कोड मिश्रित करता है। जैसे- मैला आँचल और रागदरबारी का उदाहरण दिया जा सकता है। जहाँ हिंदी के साथ-साथ विशेष आंचलिक शैली का भी प्रयोग हुआ है।



कोड; सम्प्रेषण की दुनिया में किसी भी भाषा को कोड के नाम से अभिव्यक्त किया जाता है। इसलिए कोई भी भाषा एक कोड होती है। किसी भी भाषा को बोलने के पहले जो मन में विचार उत्पन्न होता है। इस विचार को वक्ता संप्रेषित करना चाहता है। इन संप्रेषणीय संदेश को किसी विशेष नियम के तहत और भाषिक उपायों के साथ अभिव्यक्त किया जाता है। इस प्रक्रिया को ही कोडबद्ध करना कहते हैं। जब वक्ता अपने भावों को इनकोड करके

अभिव्यक्त करता है। उसके बाद सुनने वाला व्यक्ति कोड की व्यवस्था को उसी नियम के अधीन समझने का प्रयास करता है। पुनः वह भी इसी प्रक्रिया को दोहराता है। इस प्रकार वह प्राप्त संदेश को Decode and encode करता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि वक्ता और श्रोता दोनों ही कोड के संसाधन (processing) द्वारा संदेश देते और लेते हैं। इसी तरह की प्रक्रिया मोर्स कोड में भी किया जाता है। जिसका प्रयोग बाद में तार की दुनिया में होता था। बाद के

दिनों में नोकिया ने एसएमएस के रिंगटोन में मोर्स कोड का प्रयोग किया। जिसे बाद में डिकोड करने पर एसएमएस की ध्वनि प्राप्त होती थी। हिंदी भाषा भी एक कोड है जिसका विस्तार 1857 की क्रांति के बाद तेजी से हुआ। हिंदी के प्रसिद्ध इतिहासकार आचार्य रामचंद्र शुक्ल का यह कथन सटीक बैठता है “देश के भिन्न-भिन्न भागों में मुसलमानों के फैलने तथा दिल्ली की दरबारी शिष्टता के प्रचार के साथ ही दिल्ली की खड़ी बोली शिष्ट समुदाय के परस्पर व्यवहार की भाषा हो चली थी।”¹

आधुनिक और उत्तर-आधुनिक युग में यह पाया गया है कि विकसित समाज के कोड का विस्तारीकरण किया जाता है। उसके लिए तरह-तरह के औजार उपलब्ध कराए जाते हैं। पारंपरिक रूप इसमें स्तंभ, पोस्टर बैनर, साहित्य शब्दकोश आते हैं। इस उपलब्ध सामग्री को विस्तार करने के लिए इंटरनेट का प्रयोग किया जाता है। विकिपीडिया इसका एक महत्वपूर्ण उदाहरण है। जब इस प्रकार के कोड का विस्तार होगा तो वह दूसरे समुदाय के कोड से प्रभावित भी होगा और ऐसी ही परिस्थिति में कोड-अंतरण का जन्म होता है। हिंदी को विस्तृत करने में पहले संचार, फिर दूरसंचार, अब जनसंचार और न्यू मीडिया महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

कोड मिश्रण (Mixing) और कोड अंतरण में (code switching/transfer) अंतर-

प्रायः ऐसा होता है कि जब वक्ता एक भाषा में दूसरी भाषा के तत्वों को मिलाता है, तो उसे कोड मिश्रण कहते हैं। यदि कोई व्यक्ति हिंदी भाषा बोलते समय उसी परिवार की अन्य भाषा या दूसरे परिवार की भाषा रूसी, फ्रेंच, स्पेनिश, अंग्रेजी के शब्द, पदबंध, उपवाक्य, लोकोक्ति, मुहावरे आदि को मिलाता है, तो इस स्थिति को कोड मिश्रण कहा जाता है। किन्तु वर्तमान समय में हिंदी और अंग्रेजी के लिए इसका प्रयोग अधिक होता है। जो भाषा प्रधान रहती है उसे मैट्रिक्स भाषा कहते हैं और जिस भाषा के तत्व को मिलाया जाता है उसे एंबेडेड भाषा कहते हैं।

कोड मिश्रण के उदाहरण-

मैं शॉपिंग करने मॉल जा रहा हूँ

चीन और पाकिस्तान के साथ ऐसा ही होना चाहिए। टीट फोर टैट। (टैग स्वीचिंग)

आप को ऑल डॉक्यूमेंट्स (All documents) जैसे किट्रांसफर सर्टिफिकेट (Transfer certificate) मार्कशीट (mark sheet) ग्रेड कार्ड (grade card) बर्थ सर्टिफिकेट (birth certificate) 2 पासपोर्ट करने हैं। वेरिफिकेशन (verification) के बाद रिटर्न (return) कर दिया जाएगा।

आप सभी को नेक्स्ट सैटरडे (Next Saturday) तक असाइनमेंट (assignment) जमा करना है।

मेन नोटिस बोर्ड (Main notice board) या हॉस्टल ऑफिस (hostel office) के सामने वाले नोटिस बोर्ड (notice board) पर न्यू बुक (new book) और मैगजीन (magazine) की लिस्ट (list) लगी हुई है।

सेंट्रल लाइब्रेरी (Central Library) का टाइमिंग (timing) 9 to 10 है। रात में रीडिंग रूम (reading room) खुली रहती है। इंडिपेंडेंस डे (Independence Day) के कारण लाइब्रेरी (library), कंप्यूटर लैब (computer lab) दोनों बंद है।

हॉस्टल ऑफिस (hostel office) से रूम रेंट (room rent) और मेस बिल (mess bill) का रिसिप्ट (Receipt) ले लेना नहीं तो डिनर (dinner) ब्रेकफास्ट (breakfast) सब बंद हो जाएगा।

कोड अंतरण- एक भाषा को बोलते समय होता है जब वक्ता दूसरी भाषा के बोली और वाक्य का प्रयोग करता है, तो उसे कोड अंतरण (code switching/transfer) कहा जाता है। University में Internet facility broadband plus WiFi दोनों है but, I have no laptop and mobile.

Hostel के first floor का Water Cooler खराब है। go to ground floor.

Hostel में power last hour से नहीं है। what should we do now.

इसके साथ उदाहरण के रूप में **श्री इंडियट** सिनेमा का एक संवाद लिया जा सकता है। जहाँ नामांकन के दौरान कॉलेज के **प्रिंसिपल स्टूडेंट्स** को संबोधित करते हुए कहते हैं- **डॉट फॉरगेट** कि हर साल **आईसीई** में 4 लाख एप्लीकेशंस आते हैं और उनमें सिर्फ 200 सेलेक्ट होते हैं यू। यहाँ पर हिंदी मैट्रिक्स भाषा है जबकि अंग्रेजी को एंबेडेड भाषा के रूप में प्रयोग किया गया है। इसका प्रमुख कारण भारत में प्रौद्योगिकी और विज्ञान की शिक्षा हिंदी भाषा में नहीं होती है। वर्तमान समय में हिंदी और अंग्रेजी भाषा के संदर्भ को बोल चाल में हिंग्लिश के नाम से भी जाना जाता है।

इस प्रवृत्ति को कोड अंतरण (code switching/transfer) कहते हैं।

द्विभाषिकता के कारण कोड अंतरण (code-transfer)

जब भी कोई व्यक्ति द्विभाषिक (हिंदी, बांग्ला और अंग्रेजी) हो और किस व्यक्ति से बात करता है, तो द्विभाषिकता की स्थिति में अचानक या महत्वपूर्ण बातों को रेखांकित करने के लिए अंग्रेजी वाक्य या शब्द या वाक्य का अनुवाद प्रस्तुत करता है। यहाँ भाषा एक हिंदी या भाषा दो अंग्रेजी वह कोड कहलाता है। द्विभाषिकता के कारण एक ऐसी स्थिति उत्पन्न होती है कि जब वह कौडो का बारी

¹आचार्य रामचंद्र शुक्ल; हिन्दी साहित्य का इतिहास; पृ. 281

बारी से संवाद के दौरान उपयोग करता। इसी प्रक्रिया को कोड मिश्रण कहते हैं। सामान्यतः कोड स्विचिंग और मिक्सिंग की प्रक्रिया महानगरों में देखी जाती है। मुख्य रूप से कोड स्विचिंग और मिक्सिंग भाषा एक +भाषा दो, भाषा एक +भाषा तीन, भाषा एक +भाषा चार में देखी जाती है। 21 वीं सदी में कोड स्विचिंग हिंदी और अंग्रेजी के संप्रेषण के दौरान अधिक होता है। इसका प्रमुख कारण हिंदी प्रदेश से रोजगार की तलाश में पलायन करने वाले लोग और न्यू मीडिया की बढ़ती ताकत है। एक तरफ शिक्षित युवा हिंदी और अंग्रेजी का प्रयोग अधिक करते हैं। वहीं दूसरी तरफ मजदूरों की भाषा में कोड मिक्सिंग होता है किंतु यहाँ अंग्रेजी भाषा के बजाय दो शैलियों या दो बोलियाँ या एक ही परिवार के दो भाषाओं के बीच होता है।

हैदराबादी हिंदी जिसे दक्खिनी हिंदी के नाम से भी जाना जाता है।

कल आए सो आदमी का नाम क्या है? बाहर से आये प्रवासी मजदूर भी कुछ वर्षों के बाद इस तरह के शैलियों का प्रयोग करते हैं।

कौन सा बच्चा क्लासा को फर्स्ट आता उसे इच इनाम देते?

चारमिनार के बाजूइच मेरा शॉप है।

इसी प्रकार बंबईया हिंदी पर मराठी का प्रभाव है, तो कलकत्ता की हिंदी पर बांग्ला का प्रभाव उसी तरह दिल्ली के हिंदी पर हरियाणवी का प्रभाव देखा जाता है।

विज्ञापन की भाषा में कोड अंतरण

टीवी के दो विज्ञापन को लिया जा सकता है। पहला विज्ञापन कपड़ा धोने वाला साबुन का हो सकता है। जिसमें घड़ी-‘पहले इस्तेमाल करें फिर विश्वास करें’ और ‘फेना- फेना ही लेना’, वॉशिंग पाउडर निरमा आदि। इसके विज्ञापन में कंपनी देवनागरी लिपि का प्रयोग करती है। वही सामान्य साबुन जैसे-लक्स, लाइफबॉय के लिए देवनागरी लिपि का प्रयोग नहीं किया जाता है। बल्कि यहाँ कोड मिश्रण और कोड अंतरण किया का प्रयोग किया जाता है। वॉशिंग पाउडर और डिटर्जेंट का प्रयोग ग्रामीण क्षेत्रों में भी होता है। इसलिए विज्ञापन की भाषा में कोड अंतरण और लिप्यांतरण नहीं किया जाता था। लेकिन पिछले एक दशक में बाजार की बढ़ती ताकत ने देवनागरी लिपि के स्थान पर रोमन लिपि को स्थापित कर दिया। हल्दी, मिर्ची, धनिया, जीरा के विज्ञापन के लिए भी रोमन लिपि का प्रयोग होता है। इसका परिणाम यह हुआ कि छोटे-छोटे उत्पादों पर भी देवनागरी के स्थान पर लोगों को रोमन लिपि नजर आने लगा। इससे यह पता चलता है कि कंपनी के ग्राहक के किस समूह तक पहुंचना चाहती है। विज्ञापन कंपनी द्वारा कोड मिक्सिंग में क्रिया के स्थान पर संज्ञा-पद को बदला जाता है। विभिन्न क्षेत्र के विज्ञापन के

कुछ उदाहरणों के माध्यम से कोड मिक्सिंग की प्रक्रिया को समझने का प्रयास करेंगे।

जैसे- फैशनेबल महिलाओं की एक ही पसंद- विपुल साड़ियां।

Close Up	क्या आप क्लोज़ अप करते हैं (kya AAP close up karte hai)
sunsilk	कम ऑन गर्ल्स वक्त है साइन करने का (come on girls waqt hai shine karne ka)
Coca Cola	लाइफ तो ऐसी (Life ho to aisi)
McDonalds	व्हाट योर बहाना इज (What your bahana is?)
Lays	पल बनाएँ मैजिकल (Pal banaye magical)
Kit-kat	ब्रेक बनता है (Break banta hai)
Pepsi	ये दिल मांगे मोर (Yeh dil mange more)
Tata tea	टेस्ट कामयाबी का (Taste Kamyabi ka)

उपर्युक्त विज्ञापन को लिखते समय देवनागरी लिपि से अधिक प्राथमिकता रोमन लिपि को दी गई है। प्रायः यह अखबार के पन्नों, टीवी के विज्ञापन और उत्पाद पर देखने को मिलता है।

बॉलीवुड के उत्पादों में कोड मिश्रण

बॉलीवुड हिंदी सिनेमा और गाना जिसे जनसंचार का एक बड़ा माध्यम मान सकते हैं। यहाँ निर्मित सिनेमा के नाम और पटकथा में अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग बढ़ा है। किन्तु पटकथा की तुलना में सिनेमा के शीर्षक से इस कोड मिश्रण की प्रवृत्ति को समझा जा सकता है। नब्बे के दशक के पहले बने सिनेमा में भी कोड मिश्रित होता था किन्तु उसमें फारसी भाषा के बहुसंख्यक शब्द होते थे।

इक्कीसवीं सदी में निर्मित फिल्म	निर्देशक
चांदनी चौक टू चाइना	निखिल आडवाणी
आसमा : स्काई'ज़ द लिमिट	रोहित नायर
राज - द मिस्ट्री कंटीन्यूअस	मोहित सूरी
लक बाय चांस	जोया अख्तर
विकट्री	अजीतपाल मंगत
देव डी	अनुराग कश्यप
दस्टोन मैन - मर्डर्स	मनीष गुप्ता
13 बी	विक्रम के कुमार
लिटिल जीजू	सोनी
लॉटरी	हेमंत प्रभु

स्ट्रेट	पार्वती बाला गोपालन
एक : द पावर ऑफ वन	संगीत सिवान
कॉफी हाउस	गुरवीर ग्रेवाल
स्कूल डेज	दिलीप सूद
लेट्स डांस	आरिफ शेख
पेइंग गेस्ट	परितोष पेंटर
न्यूयॉर्क	कबीर खान
संकट सिटी	पंकज आडवाणी
लक	सोहम शाह
लव आज कल	इम्तियाज अली
लाइफ पार्टनर	रूमी जाफरी
डैडी कूल	के मुरली मनोहर
लव खिचड़ी	श्रीनिवास भाषण
टॉर्च	रमेश खट्टर
यह मेरा इंडिया	एन चंद्रा
फॉक्स	दीपक त्रिपाठी
वांटेड	प्रभु देवा
व्हाट इज योर राशि	आशुतोष गोवारीकर
डू नॉट डिस्टर्ब	डेविड धवन
वेक अप सीड	आयन मुखर्जी
एसिड फैक्ट्री	सुपर्ण वर्मा
ऑल द बेस्ट : फन बिगिंग्स	रोहित शेट्टी
ब्लू	एंथनी डिमूजा
रॉकेट सिंह : सेल्समैन ऑफ द ईयर	सीमित अमीन
श्रीडिडिट्स	राजकुमार हिरानी
गैस ऑफ वासेपुर	अनुराग कश्यप

उपर्युक्त सिनेमा के वो नाम हैं जिसके संप्रेषण का माध्यम तो हिंदी है। सिनेमा के नाम भी संज्ञा और विशेषण की प्रधानता और क्रिया गौण रहती है। जबकि पठकथा में कोड मिश्रण और कोड अंतरण दोनों का प्रयोग होता है। वर्तमान समय में हिंदी भाषा के गानों में स्पेनिश के शब्दों का भी मिश्रण किया जा रहा है। यह गाना पब और पार्टी में छाईरहती है। ऐसे प्रयोग से उपभोक्ता के पसंद और न पसंद को समझा जाता है।

निष्कर्ष-

जैसा की हम सभी जानते है कि भारत गणराज्य की राजभाषा हिंदी और अंग्रेजी है जबकि इसके साथ अलग-अलग प्रांत की अलग अलग भाषाएँ हैं। बढ़ता महानगरीय व्यवस्था और सिकुड़ता ग्रामीण व्यवस्था, पूँजीवादी अर्थव्यवस्था, सूचना प्रौद्योगिकी का विकास, सभी विषय का हिंदी में पढ़ाई न होना आदि कोड अंतरण का प्रमुख कारण बनती है। किन्तु इसके साथ विभिन्न प्रयोजन में विभिन्न प्रकार की भाषा भी कोड अंतरण का कारण बनती है। जैसे- कार्यालय में कार्य के रूप में अंग्रेजी, बोलने के रूप में हिंदी। मंदिर में पुजा के रूप में संस्कृत और बोलने के रूप में हिंदी। ग्रामीण परिवेश के रिश्तेदारों से बात करने के लिए स्थानीय बोली जबकि बच्चों के मित्र से बात करने के लिए हिंदी और अंग्रेजी। ऐसे कई कारण होते है जिसके कारण कोड स्विचिंग, कोड मिक्सिंग और कोड ट्रांसफर का जन्म होता है। इस प्रकार की सामाजिक संरचना में देखते है कि उपभोक्ता/पाठक थियोडोर एडोर्नो और मैक्स होर्खाइमर के संस्कृति उद्योग (जर्मन: Kulturindustrie) का उपभोक्ता बनाता है। इस प्रकार के उत्पादों से भाषा के नियमों का विकेंद्रीकरण होता है। जहां उपभोक्ता आचार्यों और विद्वानों की रचना पर निर्भर न रहकर बाजार के पर्यावरण में सांस लेता और दम तोड़ता है।

संदर्भ ग्रंथ-

1. अभय कुमार दुबे (सं.); विजय बहादुर सिंह एवंयोगेंद्र यादव(शृंखला संपादक); भारत का भूमंडलीकरण; वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली (संस्करण - 2008)
2. अर्जुन चव्हाण; अनुवाद चिंतन; अमन प्रकाशन, कानपुर (संस्करण - प्रथम, 1998)
3. कमला प्रसाद (सं.); फिल्म का सौंदर्यशास्त्र भारतीय सिनेमा; शिल्पायन प्रकाशन, नई दिल्ली (संस्करण - 2010)
4. जगदीश्वर चतुर्वेदी; टेलीविजन संस्कृति और राजनीति; अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली (प्रथम संस्करण - 2004)
5. भोलानाथ तिवारी; हिंदी भाषा का इतिहास; वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली (षष्ठसंस्करण - 2010)
6. रामचंद्र शुक्ल; हिन्दी साहित्य का इतिहास; मलिक एंड कंपनी; (जयपुर संस्करण)2009
7. Barbara E. Bullock and Almeida Jacqueline Toribio (Edited by); The Cambridge Handbook of Linguistic Code-switching; Cambridge University Press The Edinburgh Building, Cambridge CB2 8RU, UK
8. <https://en.wikipedia.org/wiki/Bollywood>
9. <https://shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/6483/6/06>